जयकान्त मिश्र

डॉ. जयकान्त मिश्रक जन्म मधुबनी जिलाक गजहारा ग्राममे 20 नवम्बर 1922 ई. मे भेल। हिनक पितामह म. म. जयदेव मिश्र एवं पिता म. म. उमेश मिश्र छलथिन। 1943 ई. मे ओ प्रयाग विश्वविद्यालयसँ अंग्रेजीमे एम. ए. कऽ 1944 ई. मे ओहि विश्वविद्यालयमे अंग्रेजीक व्याख्याता पद पर नियुक्त भेलाह, जतयसँ ओ विश्वविद्यालय प्राचार्य एवं अंग्रेजीक विभागाध्यक्ष पदसँ सेवा निवृत भेलाह।

'ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर' शोध-प्रबन्ध पर हिनका पी-एच. डी. क उपाधि प्रदान कयल गेल। तदुपरान्त साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा हिनका भाषा सम्मान भेटल।

मैथिली आन्दोलनक अग्रणी डॉ. जयकान्त मिश्रक मौलिक कृति अछि- ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर (दू भाग), वृहत् मैथिली शब्द कोष (दू खण्ड), तिरहुता ककहरा, मैथिलीमे प्राथमिक शिक्षा, ओ ए इन्ट्रोडक्शन टू फॉक लिटरेचर (दू खण्ड)। हिनक द्वारा सम्पादित कृतिक नाम अछि - विद्यापतिक गोरक्ष विजय, किरतनिया नाटक, ज्योतिरीश्वरकृत मैथिली धूर्त्तसमागम, लाल कविक गौरी स्वयंवर, नन्दीपतिक श्रीकृष्ण केलिमाला, शिवदत्तक गौरीपरिणय आदि।

मिथिला, मिथिलावासी, मैथिलीक जीवन भरि उत्थानक आकांक्षी डॉ. जयकान्त मिश्रक निधन 3 फरवरी 2009 कऽ भऽ गेलनि। मैथिली भाषा आन्दोलनक इतिहासमे हिनक स्थान सर्वोपरि अछि। प्राथमिक शिक्षामे मैथिलीकेँ स्थान दिअयबाक विन्दु हो अथवा साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक स्वीकृतिक प्रश्न - जयकान्त मिश्रक योगदानक उल्लेख अपरिहार्य अछि। मैथिलीक सेनानी, मैथिली साहित्यकेँ अखिल भारतीय परिचिति देनिहार जयकान्त मिश्र मिथिला-मैथिलीक अविस्मरणीय अंग छथि। ओ आइयो प्रेरणास्रोत छथि, सभ दिन रहताह। हिनक भूमिका साहित्य अकादेमीक प्रतिनिधि रूपमे महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रस्तुत निबन्ध 'भाखा' पत्रिकासँ लेल गेल अछि। एहि निबन्धमे लेखक पं. जवाहर लाल नेहरूक महत्ता ओ विद्वत्ताक उल्लेख कयने छथि। पं॰ नेहरू पूजनीय छलाह अपन गुण वैशिष्ट्यक कारणेँ । हिनक चरित्रमे उदारता एवं शालीनता भरल छल। साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक समावेशक प्रसंग लेखककेँ अनेक बेर पं. नेहरूसँ भेट करबाक अवसर भेटलनि आ प्रत्येक बेर हिनक सदाशयता ओ व्यवहार देखि ई आश्चर्य चकित भेलाह।

जवाहर : जेहन देखलहुँ जेहन पओलहुँ

आब हमहूँ बूढ़ भेल जाइत छी। बहुतो अनुभव भेल, बहुतो व्यक्तिकेँ देखल, बहुत व्यक्तिक सम्बन्धमे सुनल। ताहि सभमे सभसँ अधिक प्रभाव ओ प्रेरणा देनिहार व्यक्तित्व, जनिकासँ मिथिला ओ मैथिलीक हेतु कार्य करबाक क्रममे सम्पर्क भेल, पाओल जवाहर लाल नेहरूमे।

ओना प्रयागमे हमहूँ रहैत छलहुँ, प्रयागेमे ओहो रहैत छलाह। नेनहिसँ हुनकर कीर्त्ति सुनैत-देखैत छलहुँ। सभसँ पहिने जे हुनका देखल से मोन पड़ैत अछि। इलाहाबाद यूनिवर्सिटीक लार्ज लेक्चर थियेटरमे एकटा छात्र यूनियनक तत्त्वावधानमे कोनो विषयक परिसंवाद गोष्ठीमे। इतिहासक प्रसिद्ध विद्वान् डाक्टर ईश्वरी प्रसाद बाजिकेँ हटल रहथि, तखनहि ओ मंच पर कुदिएकेँ ठाढ़ भेलाह । डॉ. ईश्वरी प्रसादक उक्तिकेँ जे ओ झाड़ि कए प्रतिवाद कएलथिन्ह से हमरा आइयो ओहिना स्मरण होइत अछि - "ई सभ पुरानपंथी विचार थिकनि- एतेक आगू संसार चल गेल अछि - तथापि प्रोफेसर लोकनि आधुनिकता एवं प्रौढ़ताकेँ नहि पबैत छथि। धिक्कार छनि जे ओ सभ आइओ काल्हि एहने विचार पोसने छथि ..... इत्यादि।" विषय की छलैक, से सभ नहि स्मरण अछि मुदा हुनक तेजी ओ मुहफट वाणी नहि बिसरैत अछि। भाषण ओ अंग्रेजीएमे देने छलाह। दोसर बेर ओ इलाहाबाद विश्वविद्यालयक प्रायः सत्तरिम वर्षक उत्सव समारोहमे तथा ओकर हीरक वा स्वर्ण जयंतीक अवसर पर विशेष रूपेँ मोन पड़ैत छथि- ओहुँ अंग्रेजीएमे बजलाह। हमरा हुनक वाणी संगीतमय कोनो कविक वाणी सन बुझाएल- गद्यमे काव्यक सृष्टि करैत ओ प्राचीन भारतक उठैत ओ चिकरैत नवीन युगमे पदार्पणक कथा कहि रहल छलाह- हुनका वाणीमे आवेश छल, किछु संगीत छल,किछु युग के ललकारबाक एवं नवयुवककेँ आह्वान करबाक कछमछी छल।

ई सभ तँ जे छल से छल। 1942 क आन्दोलनक समय हुनक जहल जाइत काल देशक नामसँ छोटछीन सन्देश हमरा अत्यधिक प्रभावित कएलक- Freedom is in peril. Defend it with all thy might. अर्थात् "देशक स्वतंत्रता आइ संकटमे अछि। जतेक शक्ति हो से लगाए ओकरा बचबैत जाउ।" हुनक हस्तलेखक ई फोटो अखबारसभमे छपल हम देखने रही।

1961 मे इलाहाबादक अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति द्वारा दसटा दुर्लभ प्राचीन मैथिली पोथी प्रकाशित कएल गेल छल। तकरा सभक विमोचन समारोह एकटा बेस पैघ मैथिली पुस्तक प्रदर्शनीमे 15 दिसम्बर 1961 कैं अल्पसंख्यक भाषा सबहिक आयुक्त इलाहाबाद हाइकोर्टक अवकाश प्राप्त मुख्य न्यायाधीश बी. मल्लिक महानुभाव कएने छलाह तथा ओहि अवसरपर मुख्य अतिथि कविवर श्री यात्री छलाह।

एहि आयोजनक क्रममे पंडित जवाहर लाल नेहरू इलाहाबाद आएल रहथि। तैं समिति ई निर्णय कएलक जे किएक ने हुनका ई पुस्तक सभ दए, मैथिलीक समस्यासँ, विशेष कए साहित्य अकादेमीसँ सम्बन्धित वार्तालाप कएल जाए। पंडितजी साहित्य अकादेमीक अध्यक्ष छलाह तैं एहि कार्यक उपादेयता बुझल गेल। 21 दिसम्बर 1961 कैं हुनकासँ भेंट करबाक हेतु हम (ओहि समितिक अध्यक्ष रही) एवं कुमार वैद्यनाथ चौधरी (जे समितिक सचिव छलाह) आनन्द भवनमे पंडितजीसँ परामर्श करबाक हेतु आनो पोथीसभ सहित अंग्रेजीमे हमर मैथिली साहित्यक इतिहास 2 भाग लय) गेलहुँ। ओतए इलाहाबादक बहुतो गण्यमान्य लोक छलाह। मल्लिक साहेब सेहो ओहिठाम छलाह- ओ बाजि उठलाह- देखू, ई मैथिलीबलासभ थिकाह । ताबतेमे आइयो ओहिना मोन पड़ैत अछि, पंडितजी उपरका महलपर पहुँचल छलाह, आर 3-4 मिन्टहिक भीतर नीचा कक्षमे झटसँ आबि गेलाह- दिल्लीसँ आएल रहथि तकर कोनो थाकनि नहि देखाएल। चूड़ीदार पएजामा-अचकन-गुलाबक फूल सभ अनामति। प्रयाग, ओ अपन घर, प्राय: प्रधानमंत्री जकाँ मात्र नहि अबैत छलाह, प्रयागक निवासी थिकाह, एतुका अपन इष्ट मित्र-अड़ोस-पड़ोसक वर्गसँ कोना प्रेम ओ सहृदयतासँ, स्नेहपूर्वक भेंट कएलनि से देखि-देखि बड़ प्रभावित भेलहुँ। एकटा तीर्थ पुरोहित (पण्डा) भुट्टे सन छलाह तकरोसँ अपेक्षा छलनि-से आश्चर्य लागल, कारण लोक हुनका धार्मिक नहि कहनि, मुदा ओकरासँ आशीर्वाद फल-फूल नारिकेरि लेलथिन। प्राय: 20-22 गोटे ओहिठाम रहथि। सभसँ कुशल पुछैत घूमि-घूमि गप्प करैत छलाह। तैखन हमहूँ सभ आगाँ बढ़ि पोथी सभ जे अनने रही, देलिअनि। ओ देखलनि, उनटा-पुनटाकैं पढ़लनि आर बजलाह (हिन्दीएमे) जे नीक लगैछ। अवकाश भेहला पर एकरा सभकैं पढ़ब। ई कहि पोथीसभ राखए लेल ककरो दए देलथिन । ताबत चारूकात लोकसभमे ओ घूमि-घामि दू- चारि शब्द बजैत चलैत-फिरैत रहलाह। तखन हम सभ पुन: हुनकासँ गप्प करए लगलहुँ - हम कहलिअनि जे मैथिलीक सम्बन्धमे नाना प्रकारक भ्रान्ति पसरल छैक तथा ओकर प्रगतिमे बाधा राखल जाइत अछि। चोट्टे पंडितजी बजलाह जे "भाषा और साहित्य के बारे में विवाद की क्या बात है ? किसी को मैथिली या राजस्थानी से विवाद क्यों हो सकता है ?"

बस एतबे ओहि दिन हुनक भावना बुझल। स्थानीय पत्रसभमे ई समाचार दए देल ओ आशा भेल जे आब कोनो युक्तिसँ साहित्य अकादेमीक मैथिलीक हेतु विचार-विमर्श करी तखने हिनकासँ बेसी लाभ भए सकैछ।

जनवरी-फरवरी 1962 कँ हम एक -दूटा पत्र साहित्य अकादेमीकेँ मैथिलीक मान्यता देबाक हेतु देल। तकर उत्तर साहित्य अकादेमीक सचिव कृष्णा कृपलानी 3 मई 1962 कँ पत्र संख्या एस० ए० -14 /1391 द्वारा देलनि जाहिमे ओ लिखलनि जे हिन्दीक अंग मानि साहित्य अकादेमी मैथिलीओक कार्यक्रम रखने अछि - ओकरा कोनो कम आदरणीय नहि मानैत अछि।

बस एही पत्रक संन्दर्भ दए हम पंडितजीकेँ पत्र देबए लगलहुँ । हमर कहब भेल जे अपने कहने रही - "किसी भाषा और साहित्य के बारे में झगड़े की बात क्या हो सकती है?" मुदा कृपलानी मैथिलीकेँ हिन्दीक अंग मानीएकेँ साहित्य अकादेमीमे स्थान देने छथि। हम कहलिअनि जे एही प्रकारेँ मैथिलीक सम्बन्धमे झगड़ा-विवाद बाधक होइत अछि। मैथिली लेखक जे पोथी वा कविता मैथिलीक बुझि लिखैत छथि, तकरा हिन्दीक वा अन्य कोनो भाषा बनएबाक अधिकार ककरो कोना भए सकैत छैक? मैथिली भाषी वा मैथिलीक लेखक यदि अपन साहित्य ओ भाषाकेँ हिन्दीक अंग नहि मानैत अछि, आओर ओकरा पृथक् अपन भाषा ओ साहित्य मानैत अछि, तखन ओकरे कथनकेँ मानबाक चाही। हम उदाहरण देने रहिअनि जे भारतवासी भारतीय थिकाह अथवा ब्रिटिश साम्राज्यक अंग थिकाह से कहबाक अधिकार भारतवासिएकेँ छैक, ने कि ब्रिटेनक निवासीकेँ।

पंडितजी पत्र देलनि जे हुनका हमर तर्क सुन्दर ओ समीचीन बुझाइत छनि (ओ interesting शब्देँ ई भाव व्यक्त कएने छलाह) तथा हुनका जे हम पत्र देने छिअनि तकरा ओ साहित्य अकादेमीक उपाध्यक्ष डा. राधाकृष्णनकेँ समुचित विचार कए उत्तर देबाक हेतु पठाए देने छथि। ओतएसँ जे पत्रसभ उत्तरमे आयल तकर पुनः दू-तीन बेर हम प्रत्युत्तर देलहुँ। पश्चात् चीनी आक्रमणक कारणेँ देशक क्षुब्ध वातावरणमे हम तटस्थ भए चुप बैसि गेलहुँ।

अग्रिम वर्ष अर्थात् फरवरी 26, 1963 कँ एकटा पत्र हम साहित्य अकादेमीक सचिवकेँ बहुत तामस ओ क्षोभसँ देबाक नेआर कएल- से पत्र आइओ हमरा लग सुरक्षित राखल अछि। ओ पठाओल नहि गेल। कारण, ताबे हमरा पत्र भेटल जे हम साहित्य अकादेमीक साधारण सभाक सदस्य निर्वाचित भए गेलहुँ अछि आ ओकर अधिवेशन 31 मार्च 1963 कँ होएत। हम धन्यवाद दैत अपन स्वीकृति 6 मार्च 1963 कँ पठाओल आओर संगहि मैथिलीक सम्बन्धमे एकटा विधिवत् प्रस्ताव पठाए देल।

कृपलानीजी लिखलनि जे एतद् सम्बन्धी कोनो प्रचार पत्र ओ नहि बँटताह वा लोककेँ देथिन ओ हमरा स्वयं करए पड़त। हँ, प्रस्ताव कार्यसूचीपर राखल जाएत। हम 4 पृष्ठक छोट-छीन निवेदन मिथिलारक्षक उदाहरणसभ दैत तैयार कए लए गेलहुँ। संगहि एकटा विस्तृत, 'द केस ऑफ मैथिली बीफोर द साहित्य अकादेमी' नामक प्रतिवेदन अंग्रेजीमे तैआर कएल एवं तकरा सेहो 31 मार्चक अधिवेशनमे पढ़बाक हेतु लए गेलहुँ।

ओहि दिनुक सभटा दृश्य ओ घटनाक्रम आइओ मोन अछि। ठीक चारि बजे बैसारी छलैक । सभ सदस्य पंडितजीक बाट तकैत बैसल छलाह। लगेभग 80 गोटे छलाह - उमाशंकर बाजपेयी (गुजराती) , डा. श्री नगेन्द्र (हिन्दी) डा. श्री रामकुमार वर्मा (हिन्दी), राघवन् (संस्कृत), ''संधांशु'' जी (बिहार), हरेकृष्ण महताब (उड़िया), मुल्कराज आनन्द (चण्डीगढ़) आदि। हम सभकेँ एकटा कए छोटका प्रचार पत्र अपनहिसँ देने रहिअनि, मैथिली लिपिक छापल वस्तुसभ तथा टाइप कएल छोटछीन ''निवेदन''। सुधांशुजीकेँ हम कहलिअनि जे ई काज हमरेटा नहि अपनहुक थिक, ओ हमरा मैथिलीअहिमे कहलनि - ''हँ, अपने आगाँ बढ़ूँ, शुभं भूयात्।'' ताबेमे विज्ञान भवनक ओहि कक्षमे टाँगल देवाल घड़ी ठीक 4 बजे टनटन घंटी बजओलक आ ताही संग पंडितजी प्रवेश कएलनि। पंडितजीक अबैत देरी सभ ठाढ़ भए हुनक स्वागत कएलक। सभाक कार्यवाही खटाखट आरम्भ भेल। कृपलानी प्रत्येक कार्यसूचीक विषयसभक सम्बन्धमे टाइप कएल विवरण संक्षेपमे पढ़ैत गेलाह ओ तकरा लोक एकदम निश्शब्द अनुमोदन करैत गेल। हमर प्रस्ताव प्रायः अन्तिम दसम संख्या पर रहए। से जखन अएलैक तँ पंडितजी किछु मुसकुराइत बजलाह -''एहिमे सिन्धीक संग मैथिलीकेँ जोड़ल छैक से की इहे विदेशमे चल गेल भाषा छैक ? हम उत्तर देल जे सँविधानक अष्टम अनुसूचीमे जाहि भाषाक गणना नहि छैक ताहि भाषामे सिन्धी ओ मैथिली दुहू छैक जे साहित्य अकादेमीक नियमावलीक अनुसार ओहो स्वीकृत पएबाक समान अधिकारी भए सकैछ, तेँ सिन्धीक संग मैथिलीक प्रश्न जोड़ल गेल अछि।

ताहिपर पंडितजी किछु कहबाक उपक्रम कएलनि। ताबे पी. ई. एन. मे हमर परिचित मित्र गुजराती कवि उमाशंकर जोशी (जे पछाति साहित्य अकादेमीक अध्यक्ष भेलाह) ठाढ़ भए निवेदन कएलथिन जे प्रस्ताव कएनिहार (श्री जयकान्त बाबू) स्वयं आएल छथि। हुनका प्रस्ताव रखबाक अवसर देल जाइक। एहिपर पंडितजी हमरा दिस तकलनि। हम तँ तैआरे बैसल रही। उठि कए अपन विस्तृत वक्तव्य जे अंग्रेजीमे छल बाँचए लगलहुँ।

वक्तव्य हमर पछाति छपल ओ आइओ उपलब्ध अछि। ताहिमे हम पहिने पंडितजीकेँ ''आनन्द भवन'' मे जे भेंट भेल छल तकर विवरण दैत स्मरण देआओल जे ''अपने कहने रही मैथिली भाषा ओ साहित्यक सम्बन्धमे झगड़ा- विवादकेँ कोनो स्थान नहि छैक। ताही आधारपर हम अपने लग निवेदन कएल जे मैथिलीकेँ साहित्य अकादेमीमे स्थान भेटैक; जाहिसँ मैथिली उन्नति करए। अपने आश्वासन देलहुँ जे एहि सम्बन्धमे समुचित विचार करबाक हेतु कार्यालयकेँ आदेश देने छी। एम्हर चीनी आक्रमणक कारण हम किछु शिथिल भए गेल रही। मुदा अकादेमीक सदस्यता हमरा भेटल तेँ आब पुनः सचिवसँ अनुमति लए ई प्रस्ताव सभक विचारार्थ राखल अछि।

तकरा पश्चात् हम क्रमशः अपन समस्त वक्तव्य पढ़ए लगलहुँ। लगभग 45 मिनट हमर भाषण भेल। पंडितजी ध्यानसँ सभटा सुनलनि। ओहि बीच हमर मित्रलोकनि विशेषतः डा. राघवन (मद्रास विश्वविद्यालयक संस्कृत प्रोफेसर) जनिकासँ 1948 मे दरभंगा प्राच्य विद्या सम्मेलनमे खूब परिचय भेल रहए, पत्राचारो रहए) हमर कोट पकड़ि घीचए लगलाह- बैस जाउ, बहुत अधिक बजलहुँ, पंडितजी एतेक भाषण नहि बर्दाश्त करताह, अहाँक पक्ष दुरि भए जाएत, ओ खिसिआए जेताह फुसफुसाए कहैत रहलाह। हम से सभ नहि सुनि अपन वक्तव्य पूरा-पूरा देल। पंडितजी तमसाएल एकदम नहि छलाह। लोकक कहब भेलैक जे एतेक काल हुनका ककरो सुनैत रहबाक स्वभाव नहि छनि। ई हमरे सौभाग्य भेल जे ओ एतेक काल हमरा सुनैत रहलाह। आन्ध्र प्रदेशक एकटा विद्वान् पछाति एहि भाषणक विवरण डा. सुनीति कुमार चटर्जीकेँ देलथिन जे ओ हमरा लीखि पठओलनि। ताहिसँ बुझब जे हमरा भाषणसँ पंडितजी सद्यः कतेक प्रभावित भेल रहथि।

हमर प्रस्तावक अनुमोदन डा. श्री रामकुमार वर्मा (इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे हिन्दीक प्रोफेसर ओ अध्यक्ष) कएलनि। हम सदस्य सभसँ भेंट कएने रही। विभूति भूषण मुखोपाध्याय (बंगला), मामा बालेकर (मराठी) आदि हमरा पक्षमे छलाह। तखन पंडितजी स्पष्ट ओ दृढ़ स्वरमे बजलाह - ''मानलहुँ जे मैथिलीकेँ स्वतन्त्र ओ विशिष्ट भाषा ओ साहित्य परम्परा छैक। प्रश्न उठैत अछि जे तथापि ओकर संरक्षण ओ पोषण होअए अथवा नहि।''

एहिपर तखन अनेक विचार-विमर्श, तर्क-वितर्क होमए लागल। उड़िसाक नेता डा. हरेकृष्ण महताब बजलाह जे मैथिलीक प्रति देशमे न्याय होएबाक चाही। श्री मुल्कराज आनन्द (चण्डीगढ़) प्रस्ताव कएल जे एकटा राष्ट्रीय मैथिली कमीशन बहाल कएल जाए जे मैथिलीक

मान्यताकेँ जाँच करए। मिथिलाक नेता सुधांशुजी प्रस्तावित कएलनि जे एकटा छोट-छीन पुरस्कार मैथिलीओ पोथीपर देबाक औचित्य छैक। हम एहि प्रस्तावक विरोध कएलहुँ आर बजलहुँ जे मैथिली लेखककेँ ककरोसँ छोट पुरस्कार भेटलासँ नीक कोनो पुरस्कार भेटबे नहि करए - भेटए तँ अन्य भारतीय भाषा सभक समान पुरस्कार भेटए अन्यथा कोनो नहि भेटओ, से बरू नीक। हिन्दीक प्रतिनिधि ई भय देखओलनि जे देशमे आरो भाषा सभ एहि प्रकारेँ मैथिलीक समस्या उजागर कएलापर उभरत तथा तकर फल ई होएत जे एखन, जखन राष्ट्रपर चीनी संकट आएल छैक राष्ट्रमे विघटनशील तत्त्व सभ जागि उठत, तेँ ई ठीक नहि होएत।

अन्तमे नेहरूजी बजलाह जे आब ई विचार कार्यकारिणीपर छोड़ल जाए। जे उचित होएत; विचार कएल जाएत। ओहि दिन एतबे भेल। मुदा पश्चात् डा. श्री नगेन्द्र (दिल्ली विश्वविद्यालयक हिन्दी विद्वान्) हमरा चेतओलनि जे मिश्रजी अहाँ राष्ट्रविरोधी चक्रचालिमे फँसि राष्ट्रक बड़ पैघ अहित करबाक प्रयत्न कए रहल छी। अस्तु।

हमरा एकरा पश्चात् मोन पड़ल जे एक वा दू वर्ष पूर्व आर. आर. दिवाकर महाशय (केन्द्रीय मंत्री) रेडियोमे मैथिलीक कार्यक्रम करबाक आग्रह कएलापर लिखने छलाह जे की मैथिली एकटा 'ग्रन्थस्थ' भाषा थिक? हम ताही आधार पर निश्चय कएल जे दिल्ली मध्य एकटा विराट मैथिली पुस्तक प्रदर्शनीक आयोजन करी। ताहिसँ पढ़ल-लिखल सर्वसाधारणकेँ मैथिलीक पक्षक सम्यक् परिचय होएतैक। हम एहि उद्देश्यसँ प्रोफेसर हुमायूँ कबीरसँ, जे भारत सरकारक तखन सांस्कृतिक मन्त्री छलाह, भेंट कएल जे ओ ओहि प्रदर्शनीक उद्घाटन करथि। ओ कहलनि जे हुनकासँ नीक पंडितजी एहि कार्यक हेतु उपयुक्त होएताह- कारण सभ हुनके मुँह तकैत छथि-ओ जँ प्रभावित होएताह तँ मैथिलीकेँ सभ लाभ भेटत।

हम एहि बातकेँ बुझल । नेहरूक सहानुभूति ओ संवेदनशीलतासँ परिचिते रही। हुनकर उदार ओ वैज्ञानिक दृष्टिकोणपर आस्था भए गेल छल। तेँ हुनका पत्र देलिअनि। ओ तुरन्त उत्तर देलनि। बहुत विनम्र ओ संतुलित, सहानुभूतिपूर्ण ओ विशुद्ध साहित्यकारक दृष्टिकोणयुक्त उत्तर देलनि। ओ उद्घाटन करब (तकर चर्चो नहि कए लिखलनि जे यदि प्रदर्शनीक समय ओ भारतवर्षमे रहताह तँ अवश्य प्रदर्शनीमे सम्मिलित होएताह। हम अप्रैलसँ पुस्तकादि संग्रह करए लगलहुँ - पूर्वहुँ मैथिली पुस्तक प्रदर्शनी करबाक अनुभव छल। प्रदर्शनीक संगे-संग मैथिली साहित्यक विशदता, विविधाताक आइ-आइ धरिक अक्षुण्णताक प्रदर्शन करबाक आयोजन करए लगलहुँ। हमर सहयोगीसभ - अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति (प्रयाग) क कार्यकर्त्तासभ

-उमाकान्त तिवारी, राघवाचार्य शास्त्री, कुमार वैद्यनाथ चौधरी, कुमार श्री जयानन्द सिंह (बनैली डेओढ़ी), प्रोफेसर आदित्य गोपाल झा, श्री चन्द्रकान्त मिश्र आदि कार्य करए लगलाह। हमर अनुज श्री रमाकान्त बाबू ओ विजयकान्त बाबू अपना-अपना सरकारी विभागक सहयोगक संग लागि गेलाह। दूटा पैघ बंगला ठीक भेल, साउथ एक्स्टेन्शनमे। "आजाद भवन" इन्द्रप्रस्थ स्टेटमे चारिटा पैघ-पैघ हॉल भाड़ापर लेल गेल। अन्तमे पं. जवाहर लालकेँ पत्र देल जे आयोजन पूर्ण भऽ गेल अछि, ओ अपना कार्यक्रमक आधारपर कहिआ प्रदर्शनी हो से निर्णय करथु। किछुए दिनुक प्रतीक्षा कएलापर ओ दिसम्बर 9 तारीखकेँ 7 बजे साँझखन प्रदर्शनीक उद्घाटन करबाक समय निर्धारित कएलनि। हमरा कखनो अन्धकारमे नहि रखलनि, आ ने खुशामद करबओलनि ई सौजन्य आन नेतामे नहि देखैत छी।

हम तँ मैथिलीक यात्रा नेहरूजीकेँ ओ उदारता आदर कएलनि - एखन तकरे कथा कहए बैसल छी। प्रदर्शनीक हेतु ओ मात्र बीस मिनट निर्धारित कएने छलाह - से डेढ़ घंटासँ उपर समय देलनि। ओहि दिन थाकल बेसी लागथि। दू-तीनटा कथा विशेष मोन अछि- पार्लियामेन्टसँ भरि दिनुक थाकल, बूढ़ ओ लम्बा-चौड़ा व्यक्तित्व तइयो कनेको अगुताइ नहि देखओलनि- प्रत्येक कार्यक्रम ध्यान मग्न ओ एकाग्र भए सुनलनि, देखलनि, रुचि लेलनि - आइ तँ जे मैथिलीक प्रोफेसर वा नेता कोनो समारोहमे अबैत छथि तँ भाषण दए पड़ाए जाइत छथि वा जाए लेल छटपटाइत रहैत छथि - ओ तँ सभ देखलोपर टहलैत-बुलैत रहलाह। ओहि दिनुक आनन्द कहलो ने जाइत अछि-मोने-मोन आनन्द लैत छी- 500 सँ उपर मैथिलीभाषी जनसमुदायक बीच ओ सभसँ सर्वसाधारण जकाँ मिलैत-घुमैत जनताक नेता लगैत छलाह। बड़े प्रेम ओ सौहार्द्रसँ सभटा सुनैत, पुछैत, घुमलाह-तीन-चारि विशाल कक्षमे संगे-संग घुमलाह, चारूकात घुरि-घुरि सभ वस्तुकेँ देखैत, उनटओबैत रहलाह। अन्तमे पाग पहिरि फोटो खिचबओलनि। कहलिअनि, किछु प्रदर्शनीक सम्बन्ध अपन विचार लिखि देथु। कहलनि (एहिठाम लिखि दिअ आ कि डेरासँ लीख कए पठा दिअ- थाकल छलाह, वा विचार नापि-तौलिकेँ शब्दक प्रयोग करए चाहैत छलाह-से नहि बुझाएल मुदा डेरासँ पछाति हस्ताक्षर अंग्रेजी हिन्दी दुनूमे (किएक?) कए क' लिखि पठओलनि-ई साधारण बात नहि छल। बहुत सोचलापर हुनक Sincerity मात्र बुझाइत अछि - सत्यनिष्ठा एवं हृदयसँ स्नेह। से पाबि हमर मोनक की दशा भेल से की कहू ?

ओकरा पश्चात् बहुतो नेता ओ बड़का-बड़का लोकसँ सम्पर्क भेल। मुदा ओ स्नेह, ओ संवेदनशीलता, ओ विचार, ओ आत्मीयता, विषयकेँ ओ तर्ककेँ सुनबाक- बुझबाक उत्सुकता

अनकामे नहि भेटल। आब तँ लोक अपने पत्रक उत्तरो नहि दैत छथि - अपन प्राइवेट सेक्रेटरीसँ मात्र पत्रक पहुँचनामा पठाए देल तँ हमर अहोभाग्य! विषय बुझब, धैर्यसँ तर्क सुनब- ई तँ बुझाइछ, लोकमे छैके नहि। जे केओ किछु सुनितहुँ छथि से बहुधा नाटक करैत छथि। उपरका मोनसँ सुनैत छथि, काजो कए दैत छथि, मुदा ओ Sincerity, ओ भितरसँ बुझबाक चेष्टा नहि करैत छथि।

ओ कहलनि; जनगणनामे कम मैथिली भाषी संख्या लिखैत अछि तँ तकर परवाहि नहि करू, मात्र 2 लाख संख्यक आइसलेण्डक भाषा-भाषी छथि, मुदा ओहूमे नीक पोथीपर नोबेल पुरस्कार भेटलैक अछि। दोसर, सरकार मानए तकर चिन्ता नहि कए, देखी जे विद्वान् मानथि, विश्वविद्यालय मानए, लेखक मानथि- से जँ मैथिलीकेँ मानैत छथि, तँ सरकारकेँ झक मारि कए (यदि ओ जनताक सरकार अछि तँ) मैथिलीकेँ मानए पड़तैक, आर जँ एतेक पैघ क्षेत्रमे मैथिली प्रचलित अछि, जे हम सभ कहैत छी, तँ ओकर सरकारी काजमे, राजकाजमे, कोर्ट-कचहरीमे सेहो उपयोग करबाक स्वीकृति देबहि पड़तैक।

तेँ कहैत छी-जमाहिरलाल वस्तुत: 'जमाहिर' छलाह, 'लालो' छलाह, ओ हीरा छलाह; हुनका जेहन देखलिअनि, जेहन पओलिअनि, तकर तुलना नहि भए सकैछ आ प्राय: एहि जन्ममे ओ देखबामे आब नहि आओत। मैथिली आन्दोलनमे ओ एहि सरलतासँ घुलि-मिलि संग देलनि तकर हमरा कोनो आशा नहि छल।

शब्दार्थ

प्रतिवाद	-	विरोध
उपादेयता	-	उपयोगिता
समीचीन	-	उचित
क्षुब्ध	-	दु:खी
क्षोभ	-	दु:ख
उपक्रम	-	प्रयास
प्राच्य	-	पूरब

Far

प्रश्न ओ अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नक उचित विकल्पक चुनाव करू :

(i) इलाहाबादक अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति द्वारा दसटा दुर्लभ प्राचीन मैथिली पोथी सभ प्रकाशित कयल गेल छल –

(क) 1965 मे (ख) 1961 मे

(ग) 1962 मे (घ) 1964 मे

(ii) इतिहास प्रसिद्ध विद्वान् छलाह –

(क) डा० महेश्वरी प्रसाद (ख) डा० ईश्वरी प्रसाद

(ग) डा० भैरवी प्रसाद (घ) डा० रामेश्वरी प्रसाद

2. निम्नलिखित रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू :

(क) किछुए दिनुक प्रतीक्षा कयला पर ओ दिसम्बर ..... तारीख कैं सात बजे साँझखन प्रदर्शनीक उद्घाटन करबाक समय निर्धारित कयलनि।

(ख) उड़िसाक नेता डा० हरेकृष्ण ..... बजलाह।

3. निम्नलिखितमे शुद्ध-अशुद्ध फराक करू :

(क) श्री मुल्कराज आनन्द (चण्डीगढ़) प्रस्ताव कएल जे एकटा राष्ट्रीय मैथिली कमीशन बहाल कएल जाए जे मैथिलीक मान्यताकैं जाँच करए।

(ख) प्रदर्शनीकहेतु मात्र दस मिनटक समय निर्धारित कएने छलाह।

4. निम्नलिखित लघूत्तरीय प्रश्नक उत्तर लिखू :

(i) लेखक किनकासँ विशेष प्रभावित भेल छलाह ?

(ii) साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक प्रवेशक विषयमे लेखक किनकासँ भेंट कयलनि।

(iii) 1962 मे साहित्य अकादेमीक सचिव के छलाह ?

(iv) ओहि समयकैं साहित्य अकादेमीक उपाध्यक्ष के छलाह?

(v) लेखक साहित्य अकादेमीक कोन सभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह?

5. निम्नलिखित दीर्घोत्तरीय प्रश्नक-उत्तर लिखू :

(i) साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक प्रवेशक विषयमे लेखकक प्रयासक वर्णन करू।

(ii) पं० जवाहर लाल नेहरूक भाषा प्रेमक वर्णन करू।

(iii) मैथिलीक पक्षमे दोसर भाषाक विद्वान द्वारा प्रकट कयल गेल विचारक उल्लेख करू।

(iv) मैथिली कोना साहित्य अकादेमीमे प्रवेशक योग्यता रखैत अछि।

6. गतिविधि -

(i) साहित्य अकादेमीक विषय मे जानकारी प्राप्त करथि।

(ii) साहित्य अकादेमीसँ पाँच पुरस्कृत पोथीक नाम लिखू।

(iii) नेहरूक जीवनवृत्तक संकलन करू।

7. निर्देश -

(i) शिक्षक छात्रसँ भाषाक महत्त्व पर भाषण प्रतियोगिताक आयोजन कराबथि।

(ii) साहित्य अकादेमीक सम्बन्धमे शिक्षक छात्रकेँ जानकारी देथि।

(iii) शिक्षक छात्रकेँ नेहरूक उदार चरित्रक उल्लेख करथि।